International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-01-2022, Accepted: 23-01-2022, Published: 08-02-2022
Volume 8, Issue 1, 2022, Page No. 29-30

प्रेमचंद की कहानियों का दृश्यात्मक रूप

प्रियांशी गुप्ता
विभाग हिंदी, लेडी श्री राम कॉलेज फॉर विमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

सारांश
हिंदी के महान उपन्यासकार और कथाकार सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज कराया। प्रेमचंद ने अपने जीवन काल में भीषण गरीबी का सामना किया। प्रेमचंद ने जब अपनी कलम से हिंदी साहित्य को समृद्ध करना शुरू किया तब उनकी कहानियों ने न केवल साहित्य को फिल्मी दुनिया को भी प्रभावित किया। उनकी अनेक हिंदी कहानियों पर निर्देशकों ने फिल्में बनाई और उन्हें पर्दे पर दिखा कर प्रेमचंद की सराहना की। प्रेमचंद पर्दे पर दिखाई गई उनकी कहानियों पर बनी फिल्मों से पूरी तरह से नाखुश थे। उन्होंने अपनी गरीबी को दूर करने के लिए मुंबई में जाकर फिल्मी दुनिया में कदम रखा लेकिन वे अपने पैर वहां अधिक दिनों तक नहीं जमा पाए क्योंकि वहां का वातावरण और व्यवस्था उनकी समझ से परे थी। प्रेमचंद ने तो फिल्मी दुनिया को छोड़ दिया लेकिन फिल्मी दुनिया ने उन्हें आज तक नहीं छोड़ा और हमेशा याद रखा। प्रेमचंद ने अनेक सामाजिक मुद्दों पर कहानियां लिखी, जिससे पर बनी फिल्मों से विवाद भी उत्पन्न हुआ।

मूलशब्दः मोहभंग, दृश्यात्मक, विलासिता, पतनोन्मुखी, प्रौढ़ता, परिष्कृत, घृणा, फिल्मांकन, रिलीज, इंडस्ट्री, असंगठित, पलड़ा, निर्देशक, रूपांतरण, घालमेल, विवरणात्मक

प्रस्तावना
'प्रेमचंद' जो हिंदी साहित्य में महान कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में प्रख्यात हैं, जिनका नाम हिंदी साहित्य के वृहद् इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है, इनका जैसा संबंध हिंदी साहित्य से रहा है वैसा सिनेमा से नहीं। साहित्य और सिनेमा का हमेशा सही घनिष्ठ संबंध रहा है। साहित्यिक रचनाओं पर अनेक फिल्म बनाई गई। प्रेमचंद ने अपने साहित्य के लिए आम जन के बीच से समस्याओं को निकाला, उनके बारे में लिखा और तत्पश्चात उसे जनता के सामने आईने की तरह लेकर आये। लेकिन जब प्रेमचंद की रचनाओं ने सिनेमा में प्रवेश किया तो इससे प्रेमचंद ज्यादा प्रभावित और खुश नहीं हुए।
प्रेमचंद का सिनेमा से जल्द ही मोहभंग हो गया था लेकिन सिनेमा ने सदैव प्रेमचंद को याद रखा और उनकी अनेक कहानियों को दृश्यात्मक रूप में दर्शकों के सामने लेकर आये।
यदि सिनेमा की चर्चा में प्रेमचंद को याद करते हैं तो सत्यजीत रे के बिना यह चर्चा अधूरी जान पड़ती है। साहित्य और सिनेमा में जो घालमेल रहा है उसे प्रेमचंद की कहानियां और इन पर सत्यजीत रे द्वारा बनी फिल्मों में देखा जा सकता है। इस के संदर्भ में कुंवर नारायण ने अपनी पुस्तक 'लेखक और सिनेमा' में कहा है कि 'प्रेमचंद की कहानी एक इशारे पर समाप्त होती है, जोकि सत्यजीत रे की फिल्म में आते–आते एक विस्तृत दृश्य बन गया है'।
सत्यजीत रे ने बंगला में बहुत काम किया परंतु हिंदी में केवल दो ही फिल्में बनाई और दोनों ही संयोग पूर्वक प्रेमचंद की कहानियों पर आधारित हैं।
1977 में रे ने शतरंज के खिलाड़ी और 1981 में दूरदर्शन के लिए लगभग 45 मिनट की पहली फिल्म बनाई, सद्गति।
जब सत्यजीत रे ने प्रेमचंद की कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी' को दृश्यात्मक रूप से दिखाना चाहा तो उसका एक अलग ही रूप पर्दे पर पड़ा, जिसमें प्रेमचंद की कहानी कहीं विलग होती नजर आई और रे का प्रभाव और अवध के प्रति उनकी भावुकता ज्यादा नजर आती है। प्रेमचंद की कहानी कुछ ऐसे शुरू होती है 'वाजिद अली शाह का समय था। लखनऊ विलासिता के रंग में डूबा हुआ था'।
प्रेमचंद ने अपनी इस कहानी में उस समय के पतनोन्मुखी समाज का वर्णन किया है, तो वहीं सत्यजीत रे ने फिल्म में अवध की नवाबी पर ज्यादा ध्यान दिया,जिसके चलते रे द्वारा बनी फिल्म प्रेमचंद के द्वारा लिखी कहानी से अलग थलग नजर आयी।
कुंवर नारायण ने इसे इस रूप में बताया है कि 'सद्गति' में सत्यजीत रे प्रेमचंद के साथ साथ चलते हैं, जबकि शतरंज के खिलाड़ी में थोड़ा अलग हटकर भी। प्रेमचंद यदि एक स्तर पर पूर्ण विवरणात्मक है तो दूसरे स्तरों पर अत्यंत सांकेतिक भी।
प्रेमचंद की कहानी 'दो बैलों की कथा' सबसे चर्चित कहानियों में से एक मानी जाती है, जिस पर 1959 में 'हीरा मोती' नाम से फिल्म बनी, जिसमें बलराज साहनी और निरुपमा रॉय ने भूमिका निभाई थी। आगे 1977 में प्रेमचंद की कहानी 'कफन' पर फिल्मकार मृणाल सेन ने तेलुगु फिल्म बनाई जिसका नाम 'ओका उरी कथा' था। इस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला था।
प्रेमचंद की नजरों में साहित्य का जो स्थान था, वह शायद हिंदी सिनेमा का कभी नहीं रहा। प्रेमचंद ने अपना हिंदी साहित्य भी पाठकों के लिए लिखा, उन्हें जागरूक करने के लिए लिखा और तमाम मुद्दों को जनता के समक्ष लाने के लिए

लिखा। वही सिनेमा का कार्य भी अपने दर्शकों तक अपने भावों को पहुंचाना है, परंतु प्रेमचंद सिनेमा से उस तरह नहीं जुड़ पाए जिस तरह वह साहित्य से जुड़े हुए थे। सिनेमा के बारे में प्रेमचंद ने कहा है कि, 'साहित्य के भावों की जो उच्चता, भाषा की जो प्रौढता और स्पष्टता, सुंदरता की जो साधना होती है, वह हमें वहां नहीं मिलती'। उनका उद्देश्य केवल पैसा कमाना है, सुरुचि या सुंदरता से उनका कोई प्रयोजन नहीं।

इस तरह से प्रेमचंद हिंदी सिनेमा में अधिक समय तक खुद को नहीं रख पाए और वापस लौट कर आम जनता के लिए रचना करने लगे है। प्रेमचंद की अनेक कहानियों पर उस तरह से फिल्में बनाई गई,जिस तरह से शायद वह कभी रची ही नहीं गई थी। इसी व्यवस्था ने प्रेमचंद का सिनेमा से मोहभंग कर दिया था। प्रेमचंद का कहना है कि 'अभी वह जमाना बहुत दूर है, जब सिनेमा और साहित्य का एक रूप होगा। लोक रुचि जब इतनी परिष्कृत हो जाएगी कि वह नीचे ले जाने वाली चीजों से घृणा करेगी, तभी सिनेमा में साहित्य की सुरुचि दिखाई पड़ सकती है'।

प्रेमचंद हमेशा से जानते थे कि सिनेमा और साहित्य दो अलग–अलग चीजें हैं। यदि सिनेमा के अंदर साहित्य को लाना है तो पहले साहित्य को समझना और उसके प्रत्येक पहलू को बखूबी जानना आवश्यक हो जाता है। हिंदी साहित्य की किसी भी कहानी को उठाकर उसका दृश्यात्मक रूप तैयार नहीं किया जा सकता। पहले रचना को समझना और रचनाकार के भावों को समझना आवश्यक होता है, तत्पश्चात ही निर्देशक संबंधित कहानी को उचित पैमाने पर, उद्देश्यपूर्ण तरीके से, समझ बूझ के साथ ही उसका फिल्मांकन कर सकता है।

प्रेमचंद की एक कहानी 'मिल मजदूर' पर इसी नाम से फिल्म बनाई गई। जिसके रिलीज होने के बाद अनेक तरह के विवाद देखने को मिले। प्रेमचंद ने से संबंधित समस्या को फिल्म इंडस्ट्री में बताना चाहा परंतु किसी ने उनकी बात नहीं सुनी है, तब प्रेमचंद समझ गए कि यहां कुछ भी कहना और करना व्यर्थ है। तब वह निराश मन से वापस बनारस लौट आए। वहां आकर प्रेमचंद ने अपने दोस्त को चिट्ठी में लिखा कि 'सिनेमा से किसी भी तरह की बदलाव की उम्मीद रखना बेईमानी है। यहां लोग असंगठित है और इन्हें अच्छे बुरे की पहचान नहीं। मैंने कोशिश की लेकिन, अब इस फिल्मी दुनिया को छोड़ना ही बेहतर है'।

प्रेमचंद ने अपनी मृत्यु से साल भर पहले अपने में जैनेंद्र को एक खत में लिखा कि यह फिल्म 'मजदूर' मेरी कहानी पर बनी है, लेकिन मैं इसमें बहुत थोड़ा सा हूँ। मेरी कहानी में रोमांस जाने क्यों डाल दिया गया ? निश्चित रूप में प्रेमचंद कलम के बादशाह थे, परंतु सिनेमा में निर्देशक का पलडा ही भारी रहता है। हिंदी सिनेमा के शुरुआती दौर में प्रेमचंद की जिन कहानियों पर फिल्मों का निर्माण किया गया और जिस तरह से किया गया, उससे प्रेमचंद नाखुश थे परंतु यदि साठ के दशक के आसपास की प्रेमचंद की कहानियों पर बनी फिल्मों को देखा जाए तो वह काफी हद तक सार्थक सिद्ध हुई है और यदि प्रेमचंद यह देखते तो शायद निराश नहीं होते। प्रेमचंद की अनेक कहानियों का दृश्यात्मक रूपांतरण किया गया, जिनमें से कुछ सफल और कुछ असफल रही। प्रेमचंद ने भले ही सिनेमा को छोड़ दिया हो, परंतु सिनेमा ने सदैव ही प्रेमचंद को सराहा है और उनकी रचनाओं का दृश्यात्मक रूपांतरण किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लेखक का सिनेमाः कुँवर नारायण
2. प्रेमचंद की कहानीः सद्गगति और शतरंज के खिलाड़ी
3. प्रेमचंद की कहानीः मिल मजदूर
4. फिल्मः मजदूर
5. जीवन और साहित्य में घृणा का स्थानः प्रेमचंद का लेख
6. प्रेमचंद, सत्यजीत राय और सद्गतिः गिरिजाशंकर सिनेमाजी में छपा लेख